प्रकृति के पांच तत्वों का शुद्धि एवं सशक्तिकरण

पिछली कुछ शताब्दियों से, हम मनुष्यों ने प्रकृति के पांच मूल तत्वों का इस हद तक शोषण किया है कि अधिकतर तत्व अब प्रदूषित हो चुके हैं। विश्व की जनसंख्या में असामान्य वृद्धि के कारण प्रकृति के तत्वों पर मनुष्य के भरण-पोषण का भार भी असामान्य रूप से बढ़ गया है। इसलिए यह तत्व विषमय हो गए है। परिणामस्वरूप प्रकृति में असंतुलन पैदा हो गया है और आज हम सभी भूमि, वायु, जल और ध्वनि प्रदूषण जैसी बहुत गंभीर और खतरनाक समस्याओं का सामना कर रहे हैं। ग्रीन हाउस इफेक्ट; ग्लोबल वार्मिंग; ओजोन स्तर घट जाना; वनों की कटाई इत्यादि। इन सभी समस्याओं की जड़ मनुष्य का मानसिक प्रदूषण है। हमें यह स्वीकारना होगा कि दुनिया की इस स्थिति के लिए हम इंसान जिम्मेदार और उत्तरदायी हैं। इसलिए अब इसे ठीक करना हमारी जिम्मेदारी बन गई है। प्रकृति के सभी तत्वों के शुद्धिकरण, पुन: उत्थान और सशक्तिकरण के लिए हमें ईमानदारी से प्रयास करना पडेगा। सर्वशक्तिमान शिवबाबा हमसे उम्मीद करते हैं कि हम अपने सकारात्मक, शक्तिशाली, प्रेमसंपन्न संकल्पों की तरंगो के माध्यम से इसको इमानदारी से करें। पांच तत्व हैं 1. पृथ्वी- जो सभी ठोस रूप में मौजूद पदार्थो को प्रस्तुत करती है 2. जल - जो सभी तरल रूप में वस्तुओं का प्रतिनिधित्व करता है 3. वायु - जो गैस रूप में मौजूद सभी वस्तुओं का प्रतिनिधित्व करता है 4. अग्नि - जो भौतिक ऊर्जा के सभी स्वरूपों का प्रतिनिधित्व करता है। 5. आकाश - जो अंतरिक्ष का प्रतिक है।

ध्यान अभ्यास:-

आरामदायक मुद्रा में बैठें.... गहरी सांस लेना शुरू करें.... धीरे-धीरे सांस लें और छोड़ें.... जब आप साँस लें तो पेट को धीरे-धीरे बाहर की ओर आने दें और जब आप साँस छोड़ते हैं तो पेट को अंदर की ओर जाने दें.... अब अपना ध्यान अपनी साँस पर केंद्रित करें... जो सांस आप अन्दर ले रहे हो उसकी ठंडक और जो सांस बाहर निकाल रहे हो उसकी गरमाहट का अनुभव करने का प्रयास करें.... आशा है कि आप इसे महसूस कर रहे हैं.... अब आपका मन पूरी तरह से एकाग्र, स्थिर और शांत हो चुका है..... अब अपना ध्यान अपनी सांस पर से हटा लें और इसे अपने मस्तिष्क के केंद्र में केंद्रित करें और इस स्थान पर स्थित, स्वयं को एक स्वयं प्रकाशित बिंदुरूप में देखें.... अब इस मानसदर्शन के साथ निश्चय करें

"मैं न तो यह स्थूल शरीर हूं और न ही सूक्ष्म शरीर... लेकिन यह दोनों शरीर से भिन्न मैं एक चैतन्य शक्ति आत्मा हूं.... जगमगाते तारे की तरह प्रकाश का एक चमकता ज्योतिर्बिंदु हूँ.... मैं आत्मा शाश्वत और सनातन हूँ.... मेरा अस्तित्व अनादी समय से हैं और अनंत तक बना रहेगा.... अब मैं आत्मा, सूक्ष्म प्रकाश बिंदु रूप में, मेरे स्थूल और सूक्ष्म शरीर को पीछे छोड़ कर

ऊपर की ओर अंतरिक्ष में जा रहा हूँ... मैं पृथ्वी ग्रह के साथ साथ सौरमंडल के अन्य ग्रहों को भी पीछे छोड़ते हुए ऊपर की ओर जा रहा हूं... मैं सभी आकाशगंगाओं को पीछे छोड़ते हुए परमधाम की ओर जा रहा हूं....

अब मैं परमधाम में प्रवेश कर रहा हूँ जो की छठे ब्रह्मतत्व से निर्मित हैं... कितना दिव्य है मेरा यह निजधाम.... यहाँ कुछ भी साकार नहीं हैं, कोई आकार भी नहीं हैं.... बस अनंत तक सुनहरा लाल प्रकाश ही प्रकाश हैं.... मैं यहाँ अपार शांति का अनुभव कर रहा हूँ... यहाँ मेरे सर्वशक्तिमान, प्राणप्यारे शिवबाबा एक दिव्यज्योति के रूप में मेरे सामने मौजूद हैं.... कितना सुन्दर द्रश्य है.... पवित्रता की किरणें, शांति की शितल लहरे और शक्ति के स्पंदन शिवबाबा से निकलकर चारों ओर फैल रहे हैं... इनमें से कुछ किरणें, लहरे और स्पंदन मुझे छू रहे हैं और मुझमे समा रहे हैं... मैं शांति, पवित्रता और विभिन्न शक्ति से भरपूर हो रहा हूं... यह कितना सुन्दर और सुखद अनुभव है...

अब मैं साकार जगत में प्रवेश कर रहा हूँ.... और अपनी बीज अवस्था में पृथ्वी ग्रह की ओर उतर रहा हूँ... मैं अंतरिक्ष में पृथ्वी ग्लोब के ऊपर स्थित हो चुका हूँ... पूरा पृथ्वी लोक मेरी नझर के सामने है... आज मेरा उद्देश्य है अज्ञान के अंधेरे को दूर करना, प्रकृति के सभी पांच तत्वों को पावन बनाना और उसको सशक्त करना...

हे पृथ्वी... हे जल... हे वायु... हे अग्नि... हे आकाश... सबसे पहले मैं आप सभी से क्षमा मांगता हूं.... क्योंकि मैंने आपका बहुत ज्यादा दुरुपयोग और शोषण किया है.... ख़ास करके इस कलयुग में आपको सत्वहीन, शक्तिहीन और प्रदूषित किया है.... अब मैं ज्ञानसागर शिवबाबा के ज्ञान से उजागर हो चुका हूँ.... मैं अब शान्ति, पवित्रता और शक्ति से संपन्न आत्मा हूँ... आपको फिर से पावन, सतोप्रधान और शक्तिशाली बनाना मेरी जिम्मेदारी है.....

शांति, पवित्रता और शक्ति के तीव्र स्पंदन, जो मुझ बिंदु आत्मा से प्रसारित हो रहे हैं वो अब पूरे विश्व पर फैल रहे हैं... पृथ्वी का प्रत्येक कण पवित्रता और शक्ति से चार्ज हो रहा है.... यह प्रदूषित धरती फिरसे पवित्र और सशक्त हो रही है.... पृथ्वी पर मौजूद हर ठोस पदार्थ से सभी जहरीले और खतरनाक पदार्थ खत्म हो रहे हैं.... यह जमीन, जो शोषण के कारण, बंजर हो चुकी थी वो फिरसे हरियाली हो रही हैं..... अपनी उत्पादकता और खुशबू को पुन; पा रही है.... भूकंप कम होते जा रहे हैं क्योंकि पृथ्वी शांति और पवित्रता के कंपन से चार्ज हो रही है..... यही शुभ भावना हैं की पृथ्वी का शुभ हो, मंगल हो.....

वातावरण में भी चारो ओर शक्तिशाली स्पंदन फैल रहे हैं.... सभी प्रकार के प्रदूषित वायु शुद्ध और पवित्र हो रहे है.... सारा वातावरण स्वच्छ और सशक्त हो रहा है.... मुझे अत्यंत प्रसन्नता है कि बाबा मुझे प्रकृति के सभी वायु रूप पदार्थो को शुद्ध करने के इस नेक कार्य के लिए निमित्त बना रहे हैं... सारे जहरीली और खतरनाक गैसों का सफाया हो रहा है..... चारों ओर मनभावन सुगंध फ़ैल रही है और वातावरण खुशनुमा हो रहा हैं,,,, मैं तहे दिल से कामना करता हूं कि पुरे विश्व के वातावरण का शुभ हो.....

पवित्रता, शांति और शक्ति के स्पंदन पृथ्वी ग्रह पर के पानी और अन्य सभी तरल पदार्थों में पूरी मात्रा में प्रवेश कर रहे हैं... पानी की एक-एक बूंद शांति, पवित्रता और शक्ति से चार्ज हो रही है... सभी महासागरों, नदियों, झीलों, तालाब, कुएं इत्यादि से प्रदूषित तत्व निकलते जा रहे है... मलिनता ख़त्म हो रही है... पानी का प्रवाह शांत और संतुलित हो रहा है... पृथ्वी पर का पानी पूरी मात्रा में अब स्वच्छ, पारदर्शी, शीतल और सुगंधित हो रहा है... विशेष रूप से पहाड़ों और जंगलों से बहने वाली नदी का पानी अब अमृत जैसा हो गया है... पूरे विश्व में बारिश संतुलित और योग्य मात्रा में हो रही है... अब किसी बाढ़ या अकाल का कोई खतरा नहीं है.... पानी दुनिया की हर आत्माओं को तृप्त करने और खुश करने की कोशिश कर रहा है.... यही भावना है की जल की हर बूंद का शुभ हो... मंगल हो....

विशेष रूप से पवित्रता और शक्ति के स्पंदन, जो मुझ से निकलते हैं, वो अब पूरे क्षेत्र में फैल रहे हैं.. विशेष रूप से सभी प्रकार की भौतिक ऊर्जा में फ़ैल रहे है.... हम प्रकृति के इस अग्नि तत्व के अत्याधिक आभारी हैं, क्योंकि इसके बिना पृथ्वी पर जीवन ही संभव नहीं हैं..... सारे विश्व में अब गर्मी की मात्रा संतुलन में है.... और मानव जाति की सेवा सुचारू रूप से कर रही है.... इन ऊर्जाओं के संचय, प्रसारण और खपत में पूरी तरह सुसंवादिता **(Harmony)** तथा संतुलन है.... इसीलिए ग्रीनहॉउस का प्रभाव तथा ग्लोबल वोर्मींग की समस्या दूर हो रही है.... अग्नि तत्व का भी शुभ हो... मंगल हो.....

मैं देख रहा हूं और महसूस कर रहा हूं कि अंतरिक्ष-आकाश तत्व इस साकरी दुनिया का सबसे बड़ा तत्व है.... जो सभी ग्रहों, सितारों, तारा समूहों, आकाशगंगाओं सब को अपने में समाये रखता है.... यह इथर से निर्मित है, जिसके माध्यम से विभिन्न ऊर्जाओं का प्रसारण **(Transmision)** होता है.... पवित्रता और शांति की शक्ति, जो मैंने सर्वशक्तिमान

शिवबाबा से प्राप्त की है, वह अब पूरे अंतरिक्ष में चारों ओर फैल रही है..... सभी गतिविधियां, जो अंतरिक्ष में चल रही है, वो सामान्य हो रही हैं... अंतरिक्ष में समाये हुए सभी जड़तत्व और चैतन्यतत्व का शुद्धिकरण और सशक्तिकरण हो रहा हैं... अंतरीक्ष में सब कुछ शुभ तथा कल्याणकारी हो रहा हैं....

हे पृथ्वी... हे जल... हे वायु... हे अग्नि... हे आकाश... आप सब का बहुत धन्यवाद करती हूँ... क्योकि आप सभी तत्वोने बहुत काल तक मेरी सेवा की हैं... मेरा भरण पोषण किया हैं... बेहद सुख, समृद्धि और आनंद दिया हैं... आप सभी तत्वों का शुभ हो... मंगल हो... कल्याण हो....

.....ॐ शांति ... शांति..... शांति.....

ब्र. कु. प्रफुल्लचन्द्र; San Diego; USA; (M) +91 98258 92710